• जरूरी है...

पूजा से पहले संकल्प

हिंदू धर्म में पूजा-पाठ से जुड़े कई नियम बताए गए हैं. पूजा-व्रत से पूर्ण फल की प्राप्ति के लिए इन नियमों का पालन करना जरूरी होता है. शास्त्रों में बताया गया है कि पूजा पाठ की शुरुआत से पहले संकल्प लेना जरूरी होता है. व्रत की शुरुआत से पहले भी संकल्प लेने का विधान है क्योंकि संकल्प लेना भी पूजा प्रकिया का ही एक अनिवार्य अंग माना जाता है।

▸ पूजा-व्रत से पहले यदि संकल्प लिया जाए तो इससे उसका शुभ फल शीघ्र प्राप्त होता है। आइये जानते हैं संकल्प कब और कैसे लिया जाता है और यह क्यों इतना जरूरी हो जाता है। संकल्प के बिना पूजा का सारा फल देवराज इंद्र को प्राप्त होता है।

▸ धार्मिक विद्वानों का मानना है कि पूजा या व्रत से पहले यदि संकल्प न लिया जाए तो वह अधूरी मानी जाती है और पूजा का सकारात्मक फल नहीं मिलता है। वहीं धार्मिक मान्यता के अनुसार जो लोग बिना संकल्प के पूजा या व्रत करते हैं उनके पूजा का पूरा

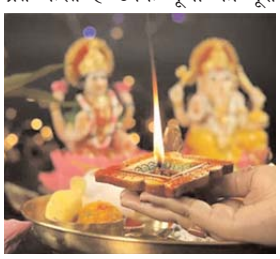

फल देवराज इंद्र को प्राप्त हो जाता है। इसलिए प्रतिदिन की सामान्य पूजा हो या फिर विशेष धार्मिक अनुष्ठान पूजा से पहले संकल्प जरूर लें।

▸ संकल्प लेने का अर्थ होता है अपने इष्टदेव या फिर स्वयं को साक्षी मानकर यह संकल्प लेना कि हम जिस मनोकामना के लिए यह पूजा या व्रत करने जा रहे हैं उस पूजन को पूर्ण करें।

▸ संकल्प लेने की विशेष विधि होती है. इसमें सबसे पहले हाथ में जल, अक्षत और फूल लेकर भगवान गणेश का ध्यान किया जाता है। क्योंकि श्रीगणेश ही सृष्टि के पंचमहाभूतों (अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु और आकाश) के अधिपति हैं. इस प्रकार संकल्प लेकर पूजा करने से पूजा बिना किसी विघ्न के पूर्ण होती है। लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि आपने जिस व्रत या पूजा के लिए संकल्प लिया हो उसे पूरा जरूर करें। संकल्प लेने के बाद व्रत या पूजा को अधूरा न छोड़ें।

• हैदराबाद का...

श्री यांगती उमा महेश्वर मंदिर...

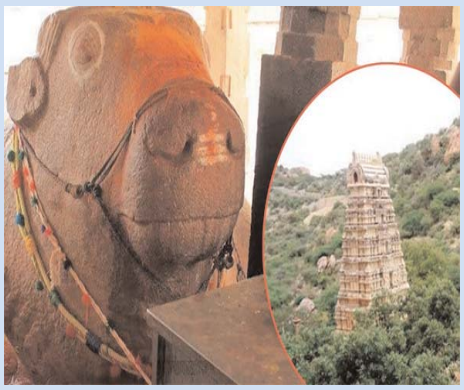

भारत में बहुत से प्राचीन मंदिर है। जिनमें से कुछ मंदिर ऐसे भी जहां होने वाली घटनाओं को देखकर लोग अपने दांतों तले उंगली दबा लेते हैं। यह सभी मंदिर अपने रहस्यों और चमत्कारों के चलते दुनिया भर में जाने जाते है। भारत में एक शिव मंदिर ऐसा भी है, जहां स्थिति नंदी जी की मूर्ति लगातार बढ़ता ही जा रहा है। इस मूर्ति के बढ़ते आकार के रहस्य का आज तक कोई भी पता नहीं लगा पाया है। इसके अलावा मूर्ति के बढ़ते आकार को लेकर लोगों के बीच बहुत की मान्यताएं भी प्रचलित हैं।

भगवान शिव का ये रहस्यमयी मंदिर हैदराबाद से 308 किमी और विजयवाड़ा से 359 किमी दूर आंध्र प्रदेश के कुरनूल में स्थित इस मंदिर का नाम है श्री यांगती उमा महेश्वर मंदिर। इस मंदिर का निर्माण वैष्णव परंपराओं के अनुसार किया गया है। इसे 15वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य के संगम वंश के राजा हरिहर बुक्का राय के द्वारा बनवाया गया था। यह प्राचीन काल के पल्लव, चोल, चालुक्य और विजयनगर शासकों की परंपराओं को दर्शाता है।

वैसे को भगवान शिव के सभी मंदिरों में नंदी जी की मूर्ति स्थिति होती है। लेकिन यहां स्थिति नंदी की मूर्ति बहुत ही खास और चमत्कारी हैं। जिसके बारे में सिर्फ लोगों का ही नहीं बल्कि वैज्ञानिकों का कहना है कि यहां स्थित मूर्ति का आकार हर 20 साल में करीब एक इंच बढ़ता है। जिसकी वजह से एक-एक कर मंदिर के खंभों को हटाना पड़ रहा है। इसके साथ ही कहा जाता है कि कलयुग के अंत तक यह मूर्ति एक विशाल रूप लेकर जीवित हो जाएगी और उस दिन महाप्रलय आएगा जिसके बाद कलयुग का अंत हो जाएगा।

इस मंदिर की स्थापना को लेकर भी एक कथा प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इस शिव मंदिर की स्थापना अगस्त्य ऋषि ने की थी। वह यहां पर भगवान वेंकटेश्वर का मंदिर बनवाना चाहते थे, लेकिन स्थापना के दौरान मूर्ति का अंगूठा टूट गया। जिसके बाद अगस्त ऋषि ने भगवान शिव की आराधना की जिसके बाद भगवान शिव प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि यह स्थान कैलाश की तरह दिखता है, इसलिए यहां उनका मंदिर बनाना ही सही है।

इस मंदिर में कभी भी कौए नजर नहीं आते है। कहा जाता है कि ऐसा ऋषि अगस्त्य के श्राप के कारण है। कथा के अनुसार, जब अगस्त्य ऋषि तप कर रहे थे, तब कौए उन्हें परेशान कर रहे थे। नाराज होकर ऋषि ने उन्हें श्राप दिया कि वे यहां कभी नहीं आ सकेंगे।

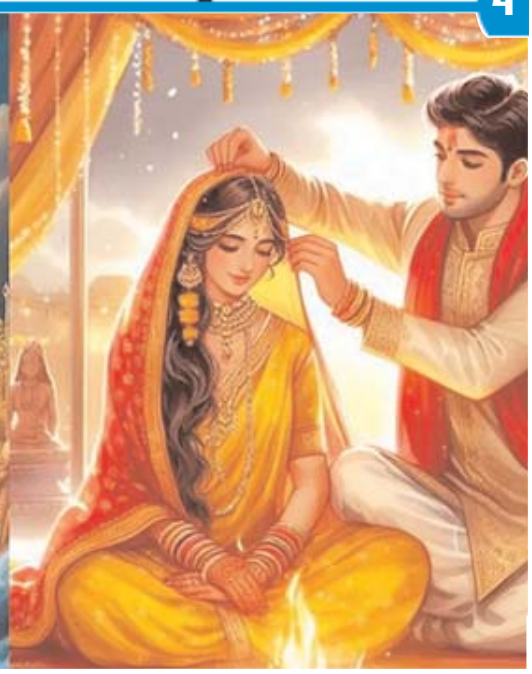

खरमास में शादी, सगाई, मुंडन, गृह प्रवेश जैसे शुभ-मांगलिक कार्यों पर रोक लगा दी जाती है। खरमास के दैरान हर तरह के मांगलिक कार्यों को बंद कर दिया जाता है।

सूर्य के मीन या धनु राशि में प्रवेश करने से इन राशियों के स्वामी बृहस्पति का प्रभाव कम हो जाता है। साथ ही भगवान सूर्य भी अपनी गति धीमी कर लेते हैं। यही कारण है कि खरमास के दैरान मांगलिक कार्य रोक दिए जाते हैं...

खरमास का महीना

खरमास को हिंदू धर्म में एक अशुभ महीने के रूप देखा जाता है। भगवान सूर्य के धनु और मीन राशि में प्रवेश के साथ ही खरमास लग जाता है. इस बार 15 दिसंबर 2024 को रात 10:19 पर भगवान सूर्य के धनु राशि में प्रवेश के साथ ही खरमास लग जाएगा। खरमास की अवधि पूरे एक महीने की होगी। 14 जनवरी 2025 मकर संक्राति पर भगवान सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के साथ ही खरमास की अवधि खत्म होगी।

खरमास में शादी, सगाई, मुंडन, गृह प्रवेश जैसे शुभ-मांगलिक कार्यों पर रोक लगा दी जाती है। खरमास के दैरान हर तरह के मांगलिक कार्यों को बंद कर दिया जाता है। सूर्य के मीन या धनु राशि में प्रवेश करने से इन राशियों के स्वामी बृहस्पति का प्रभाव कम हो जाता है। साथ ही भगवान सूर्य भी अपनी गति धीमी कर लेते हैं। यही कारण है कि खरमास के दैरान मांगलिक कार्य रोक दिए जाते हैं, क्योंकि इस दौरान अगर मांगलिक कार्य किए जाएं तो उसके परिणाम शुभ नहीं मिलते।

हालांकि मांगलिक कार्यों के विपरीत धार्मिक कार्यों के लिए खरमास के महीने को काफी शुभ माना गया है। खरमास के दौरान पवित्र नदियों में स्नान, दीपदान और दान पुण्य कर सकते हैं। उपनयन संस्कार कर सकते हैं। नामकरण किया जा सकता है। नव रत्न भी धारण किया जा सकता है। कर्णवेध संस्कार भी खरमास के महीने में किया जा सकता है। पूजा-पाठ और व्रत करने में खरमास के दौरान किसी प्रकार की कोई रोक नहीं होती।

खरमास के दौरान सुबह उठकर भगवान सूर्य के हाथ जोड़ें। खरमास के दौरान भगवान सूर्य को तांबे के लोटे में जल अर्पित करें। खरमास में मांगलिक कार्यों में रोक के साथ-साथ लहसुन प्याज से बना खाना न खाएं। खरमास में नई गाड़ी न खरीदें और अगर कोई नया व्यापार शुरू करना चाहते हैं, तो खरमास के महीने को बीत जाने दें।

भगवान सूर्य जब देवगुरु बृहस्पति के घर में आते हैं तो वो अपना तेज कम कर देते हैं। साथ ही इस दौरान बृहस्पति ग्रह की शुभता कम हो जाती है। भगवान सूर्य के तेज कम होने और देवगुरु बृहस्पति की शुभता का प्रभाव कम होने के वजह से ही खरमास में विवाह, सगाई, मुंडन, गृह प्रवेश जैसे शुभ-मांगलिक कार्य नहीं कराए जाते हैं।

एक ओर खरमास मांगलिक कार्यों के लिए शुभ नहीं होता तो वहीं दूसरी ओर खरमास में भगवान सूर्य और विष्णु की पूजा करना बहुत शुभ और फल देने वाला होता है। साथ ही अगर दान पुण्य भी करना है तो उसके लिए भी खरमास का समय शुभ माना जाता है. सनातन धर्म में खरमास का महीना बहुत ही अहम माना गया है।

इस महीने में भले ही मांगलिक कार्य न किए जाते हों, लेकिन धार्मिक कार्य किए जाते हैं। धार्मिक कार्यों को करने के लिए ये महीना बहुत ही शुभ है। पूजा-पाठ करने के साथ-साथ ही इस महीने में धार्मिक ग्रंथों का पाठ और पवित्र नदी में स्नान भी किया जा सकता है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

मनोकामना

ज्योतिष के अनुसार भगवान शिव जल्द प्रसन्न होने वाले देवता हैं और भक्तों की हर मनोकामना को जरूर पूरा करते हैं। ऐसे जल्द नौकरी पाने के लिए सोमवार के दिन भगवान शिव की आराधना जरूर करनी चाहिए। मनचाही नौकरी के लिए हर सोमवार के दिन शिवमंदिर जाकर भगवान शिव के दर्शन और उन्हें जल, कच्चा दूध और बेलपत्र जरूर अर्पित करना चाहिए। इस उपाय से जल्द नौकरी मिलने की संभावना रहती है और सभी तरह की मुसीबतें फौरन ही दूर हो जाती हैं। भगवान हनुमान को संकटमोचक कहा गया है। यह भक्तों के हर एक संकट को फौरन ही दूर कर देते हैं। नौकरी पाने के लिए हनुमानजी की आाराधना को सबसे कारगार ज्योतिषीय उपाय माना जाता है. मंगलवार को हनुमान जी की पूजा करें और उनको लाल गुलाब का फूल अर्पित करते हुए हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का नियमित पाठ करें। साथ ही अपने कमरे में हनुमान जी की उड़ती हुए फोटो लगाकर रखें।

• वास्तु...

प्रॉफिट और तरक्की

अगर व्यक्ति चाहता है कि उसके कारोबार में बढ़ोतरी हो तो उसे अपने प्रतिष्ठान के उत्तर दिशा की ओर एक नीले रंग के कमल की तस्वीर लगानी चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से व्यक्ति के कारोबार में बढ़ोतरी होती है। व्यक्ति को उत्तर दिशा की ओर ओर एक सफेद संग की गुल्लक रखनी चाहिए। उसमें पैसे डालने चाहिए. व्यक्ति अगर ये काम करता है, तो उसके कारोबर के लिए ये बहुत शुभ साबित होता है और कारोबार बढ़ने की संभावना होती है। अगर व्यक्ति चाहता है कि उसके कारोबार वृद्धि हो तो उसे नियमित रूप से खाने में काली मिर्च का इस्तेमाल करना चाहिए। व्यक्ति कारोबार में बढ़ोतरी के लिए खाने में खट्टी चीजों को भी अपनाए। वास्तु शास्त्र कहता है कि ऐसा करने से कारोबार में उन्नति के रास्ते खुलते हैं.अगर व्यक्ति चाहता है कि कारोबार बढ़े तो इसके लिए गुरुवार वाले दिन दफ्तर के ईशान कोण में स्वास्तिक बनाए।

• घर की चौखट...

हिंदू धर्म शास्त्र के अनुसार घर के मुख्य द्वार का संबंध मां लक्ष्मी से होता है। मान्यता है कि शाम के समय मां लक्ष्मी का आगमन घर पर होता है। इस बात का खास ध्यान रखें कि संध्या के समय चौखट पर न बैठें और ना ही यहां जूते चप्पल रखें। ऐसा करने से घर पर दरिद्रता आती है। शाम के समय घर के मुख्य द्वार पर दीप जलाएं और संभव हो तो शाम के समय मुख्य द्वार का दरवाजा खुला रखें।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित